केंद्रीय विद्यालय साम्बा

रचनाञ्जलि

राजभाषा ई-पत्रिका

सत्र: 2021-22

रचनाञ्जलि

हमारे संरक्षक

डॉ. डी. मंजूनाथ
उपायुक्त महोदय
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
जम्मू संभाग

गोविंद सिंह मेहता
सहायक आयुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
जम्मू संभाग

श्रीमान तिलक राज
प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय साम्बा

रचनाञ्जलि

श्रीमान उपायुक्त महोदय का संदेश

मेरे लिए यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि इस संभाग के अधीनस्थ केंद्रीय विद्यालयों द्वारा अपनी राजभाषा ई पत्रिका 2021-22 का प्रकाशन किया जा रहा है। समग्र संभावनाओं से संबंधित बाल कलाकारों एवं सुधी शिक्षकों के भाव एवं विचारों का प्रतिबिम्ब स्वरूप विद्यालय की वार्षिक राजभाषा ई-पत्रिका आपके समक्ष प्रस्तुत है।

किसी भी विद्यालय की राजभाषा ई-पत्रिका उस विद्यालय का दर्पण होती है; उसे विद्यालय की सांस्कृतिक, शैक्षणिक,खेलकूद एवं अनेक रचनात्मक गतिविधियों के साथ-साथ साहित्यिक अभिरुचि का भी पता लगता है।

विद्यालय पत्रिका इस बात का प्रमाण है कि शिक्षार्थियों के समुचित,सकारात्मक,सर्वांगीण एवं सृजनात्मक विकास हेतु विद्यालय परिवार प्रतिबद्ध है। पत्रिका प्रकाशन पर मैं उन सभी अभिभावकों, शिक्षार्थियों, शिक्षक, शिक्षिकाओं तथा विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्य जिन्होंने राजभाषा की पत्रिका हेतु अपनी रचनाएँ एवं कलाकृतियां प्रकाशनार्थ देकर प्रोत्साहित किया।पत्रिका के संपादक तथा संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ। इस राजभाषा ई-पत्रिका के प्रकाशन से छात्रों में निहित सृजनात्मक प्रतिभा उभर कर सामने आ सकेगी तथा इन्हीं बाल कलाकारों में से भविष्य में कुछ अच्छे चित्रकार, पत्रकार, लेखक एवं कवि के रूप में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने में सफल होंगे।इस वर्ष बोर्ड की परीक्षा में उपस्थिति देने जा रहे छात्र-छात्राओं को परिस्थितियों के विपरीत अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने का स्वर्णिम अवसर है।साथ ही मेरी शुभकामना है कि केंद्रीय विद्यालय संगठन अपना महत्वपूर्ण उद्देश्य पूरा करते हुए निरंतर प्रगति पथ पर बढ़ता रहे और पत्रिका के सफल प्रकाशन की शुभकामनाओं सहित विद्यार्थियों,अध्यापकों व प्राचार्यों के अथक प्रयास हेतु बधाई देते हुए उनके सफल और उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।एक बार पुनः समस्त विद्यालय परिवार को राजभाषा ई-पत्रिका के प्रकाशन सत्र 2021-22 पर बधाई एवं शुभकामनाएं।

जय हिंद

जय भारत

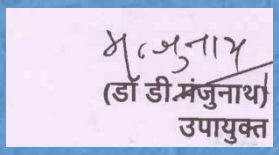

डॉ. डी मंजूनाथ, उपायुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन जम्मू संभाग।

रचनाञ्जलि

प्राचार्य महोदय का संदेश

समस्त विद्यालय परिवार के लिए अत्यंत हर्ष का विषय है कि केंद्रीय विद्यालय सांबा द्वारा सत्र 2021-2022 के लिए राजभाषा ई- पत्रिका रचनाञ्जलि का प्रकाशन किया जा रहा है|

विद्यालय पत्रिका किसी भी विद्यालय द्वारा संचालित शैक्षणिक गतिविधियों तथा सह- शैक्षणिक गतिविधियों का दर्पण होती हैं| विगत लगभग 2 वर्षों से करोना महामारी के प्रकोप के बावजूद शिक्षकों, विद्यार्थियों तथा केंद्रीय विद्यालय के अधिकारियों का शिक्षा के प्रति उत्साह निरंतर बढ़ता ही गया है| ठीक ही कहा गया है कि आवश्यकता ही आविष्कार की जननी होती है| इसी का परिणाम है कि जब छात्र विद्यालय में नहीं आ पाए तो ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से विद्यालय छात्रों के घरों तक पहुंच गया है। इसके लिए विद्यालय के सभी अध्यापक, अभिभावक और विद्यार्थी बधाई के पात्र हैं| ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से ना केवल शैक्षणिक गतिविधियों का कुशल संचालन किया गया है अपितु सह-शैक्षणिक गतिविधियों का भी पूरे मनोयोग से संचालन किया गया है| इसके लिए हमारा विद्यालय हृदय से सभी अधिकारियों का आभार व्यक्त करता है| राजभाषा ई-पत्रिका के प्रकाशन के लिए सभी छात्र, शिक्षक एवं राजभाषा ई-पत्रिका समिति के सदस्य बधाई के पात्र हैं| मैं इन सभी पात्रों का धन्यवाद व्यक्त करता हूँ ।

शुभकामनाओं सहित

तिलक राज

प्राचार्य

तिलक राज

केंद्रीय विद्यालय सांबा

रचनाञ्जलि

अनुक्रमणिका

- विद्यालय परिवार- एक नज़र (1)
- नन्हीं कलम, उमंग, तथा उनकी कृतियाँ (2-24)
- शिक्षकों की रचनाएँ (25-30)
- सह-शैक्षणिक गतिविधियाँ (31-49)
  - * एक भारत श्रेष्ठ भारत
  - * स्काउट और गाइड
  - * अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस
  - * स्वतंत्रता दिवस समारोह 2021
  - * राष्ट्रीय युवा दिवस
  - * गणतंत्र दिवस समारोह 2022
  - * सरस्वती पूजा 2022
  - * राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस 2022
  - * प्रयोगशालाएं
  - * भाषा संगम
  - * प्रभात-सभा

रचनाञ्जलि

* निपुण भारत

* कार्यपुस्तिका वितरण

* गणित उद्यान

रचनाञ्जलि

विद्यालय परिवार- एक नज़र

नन्हीं कलम, उमंग, तथा उनकी कृतियाँ

हरी भरी धरती हो

हरी भरी धरती हो,

नीला आसमान रहे।

फहराता तिरँगा,

चाँद तारों के समान रहे।

त्याग शूर वीरता,

महानता का मंत्र है।

मेरा यह देश,

एक अभिनव गणतंत्र है।

शांति अमन चैन रहे,

खुशहाली छाये।

बच्चों को बूढों को,

सबको हर्षाये।

हम सबके चेहरो पर

फैली मुस्कान रहे

फहराता तिरँगा चाँद

तारों के समान रहे।

हिमांश रैना (पाँचवी ब)

नदी में डूबते हुए (ह्रास्य कविता)

नदी में डूबते आदमी ने
पुल पर चलते आदमी को
आवाज लगाई- 'बचाओ!'
पुल पर चलते आदमी ने
रस्सी नीचे गिराई
और कहा- 'आओ!'
नीचे वाला आदमी
रस्सी पकड़ नहीं पा रहा था
और रह-रह कर चिल्ला रहा था-
'मैं मरना नहीं चाहता
बड़ी महंगी ये जिंदगी है,
कल ही तो एबीसी कंपनी में
मेरी नौकरी लगी है।'
इतना सुनते ही
पुल वाले आदमी ने
रस्सी ऊपर खींच ली
और उसे मरता देख
अपनी आँखें मींच ली
दौड़ता-दौड़ता
एबीसी कंपनी पहुंचा
और हांफते-हांफते बोला-
'अभी-अभी आपका एक आदमी
डूब के मर गया है
इस तरह वो
आपकी कंपनी में
एक जगह खाली कर गया है
ये मेरी डिग्रियां संभालें
बेरोजगार हूँ
उसकी जगह मुझे लगा लें।'
ऑफिसर ने हंसते हुए कहा-
'भाई, तुमने आने में
तनिक देर कर दी
ये जगह तो हमने,
अभी दस मिनिट पहले ही,
भर दी।
और इस जगह पर हमने
उस आदमी को लगाया है
जो उसे धक्का देकर
तुमसे दस मिनिट पहले
यहाँ आया है।

-सिमरन शर्मा (पाँचवी ब)

रचनाञ्जलि

मेरी माँ

मेरी माँ ने मेरे जीवन का ,

लक्ष्य खुद से जोड़ें।

मुझे पालने को उसने ,

अपने कई सपने छोड़ें।

कई बार बादलों को छूकर,

उसने बरसाया मेरे लिए पानी।

हाँ मेरी माँ के आंचल मैं लिखी है, मेरे जीवन की कहानी।

करतार सिंह

कक्षा दूसरी अ

केन्द्रीय विद्यालय साम्बा

मैं भी स्कूल में जाऊंगा

मम्मी मुझको बस्ता ले दो
मैं भी स्कूल में जाऊंगा,
A B C D पढ़ूंगा मैं भी
क ख ग भी पढ़ कर आऊंगा।
सीखूंगा बातें नयी और
आकर सब को बताऊंगा,
मम्मी मुझको बस्ता ले दो
मैं भी स्कूल में जाऊंगा।
पढ़ लिख कर इक दिन मैं भी
नाम बहुत ही कमाऊंगा।
होगा गर्व तुझे उस दिन
जब देश के काम, मैं आऊंगा,
कलाम, भगत सिंह जैसा बन कर
इस जग में मैं छा जाऊंगा।
मम्मी मुझको बस्ता ले दो,
मैं भी स्कूल में जाऊंगा।
आज पढ़ूंगा मैं जो तो,
कल मैं भी सबको पढ़ाऊंगा।
या फिर सरहद पर जाकर,
मैं देश का फ़र्ज़ निभाऊंगा।
आने वाले कल को मैं,
इस देश की शान बढ़ाऊंगा।
मम्मी मुझको बस्ता ले दो,
मैं भी स्कूल में जाऊंगा।

- लीशा थापा (द्वितीय अ)

रचनाञ्जलि

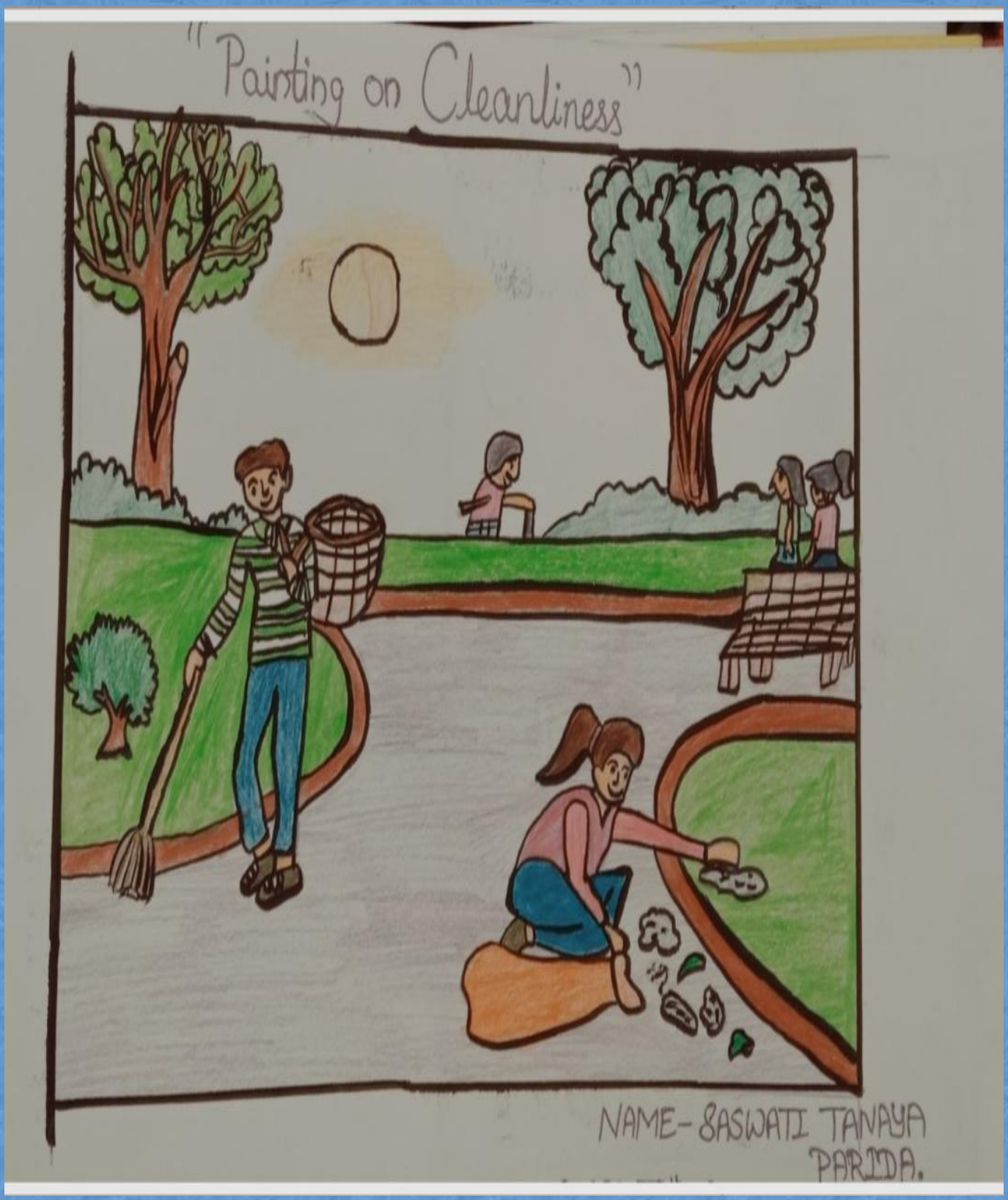

थोड़ी सी खुशियाँ

इस बार गर्मियों की छुट्टियों में मनीष अपने चाचा जी के यहाँ कानपुर गया था। वहाँ उनका पुश्तैनी मकान था। उसके पापा को अपनी नौकरी के कारण अलग अलग शहरों में रहना पड़ता था।यूँ तो मनीष को अपने दादा दादी चाचा चाची और चचेरे भाई बहनों से मिलने की बहुत इच्छा थी, इसलिए वह छुट्टियां होते ही अपने दादा दादी के यहाँ चला आया।

पापा को ऑफिस से छुट्टियाँ न मिलने के कारण उसे अकेला ही आना पड़ा । पापा ने रिजर्वेशन करा दी थी। सुबह 6:00 बजे ही कानपुर पहुँच गया।स्टेशन पर चाचाजी उसे लेने आ गए थे।

चाचा जी के साथ वह अपने दादा दादी के घर पहुँच गया। वहाँ उसके चाचा चाची दादी , चचेरे भाई बहनों ने खूब स्वागत किया। घर पर दादा दादी ने उसे खूब प्यार किया और उसका हालचाल पूछा और पढ़ाई के बारे में पूछा। थोड़ी देर में चाची जी गर्म- गर्म कचौड़ियाँ बनाकर ले आई। नाश्ते में और भी बहुत सारी चीजें थी ऐसा लग रहा था जैसे उन्होंने बहुत पहले से तैयारी करके रखी थी। सबने मिलकर बैठकर नाश्ता खाया और खूब गप्पे लगाई। इस तरह से सब ने पूरा दिन खूब मज़े किये। दूसरे दिन सुबह मनीष जब उठा तो उसने देखा दादाजी फ्रिज में बहुत सारी पानी की बोतलें भर के रख रहे थे। मनीष ने उत्सुकतावश दादाजी से पूछा कि वे इतनी सारी पानी की बोतलें फ्रिज में क्यों रख रहे है? मनीष ने मोहित से पूछा। मोहित ने कहा थोड़ी देर बाद तुम्हें खुद पता चल जाएगा। करीब 10:00 बजे सब्जी वाला सब्जी बेचने आया दादाजी ने उससे बहुत सी सब्जियाँ खरीदी। गर्मी बहुत ज्यादा थी इसलिए दादाजी ने उससे कहा कि वह पानी की एक ठंडी बोतल अपने साथ ले जाएं और पानी पी लें।

उसने भी दादाजी को दो खाली बोतलें दे दी। शायद वह इसे कल दादाजी से ले गया था। दोपहर के समय दादाजी किसी काम से बाहर गए उस समय भी दादाजी ने चार-पाँच बोतलें अपने झोले में रख ली। रास्ते में यदि किसी को प्यास लगे और वो उसे पानी दे सके। ये देखकर मनीष ने दादाजी से पूछा कि दादाजी आपको क्या मिलता है लोगों को पानी की बोतलें दे कर?

दादाजी ने उत्तर दिया मन की खुशी।बेटा ये बोतलें बेकार में पड़ी रहती है यदि ये किसी के काम आ जाए तो एक तो किसी की प्यास बुझ जाएगी और हमें थोड़ी सी खुशियाँ मिल जाएँगी। इस तरह से हम छोटी - छोटी खुशियों से ही अपना जीवन सफल बना सकते हैं।

मनीष को लगा दादा जी बिल्कुल ठीक कह रहे हैं थोड़ी सी खुशियाँ बांटने में कोई हर्ज़ नहीं है। अगली गर्मियों में वह भी प्लास्टिक की बोतलों से लोगों को ठंडा पानी देगा।

शिक्षा -हमें लोगों की मदद करनी चाहिए।

अभिमन्यु शर्मा

कक्षा दूसरी अ

रचनाञ्जलि

भारत माँ

भारत माँ तुझे प्रणाम

जीना मरना तेरे नाम।

हम हैं तेरे अमर सपूत

रखेंगे हम तेरा मान

सब से ऊँची तेरी शान।

झुकने न देंगे तेरी शान।

जय हिन्द

मुकेश सिंह पुण्डीर

कक्षा दूसरी अ

Saswati

मुर्गे की अकल ठिकाने

एक समय की बात है। एक गांव में ढेर सारे मुर्गे रहते थे। गांव के बच्चे ने किसी एक मुर्गे को तंग कर दिया था। मुर्गा परेशान हो गया, उसने सोचा अगले दिन सुबह मैं आवाज नहीं करूंगा। सब सोते रहेंगे तब मेरी अहमियत सबको समझ में आएगी, और मुझे तंग नहीं करेंगे। मुर्गा अगली सुबह कुछ नहीं बोला। सभी लोग समय पर उठ कर अपने-अपने काम में लग गए इस पर मुर्गे को समझ में आ गया कि किसी के बिना कोई काम नहीं रुकता। सबका काम चलता रहता है।

नैतिक शिक्षा - घमंड नहीं करना चाहिए आपकी अहमियत लोगो को बिना बताये पता चलता है।

पलक

कक्षा – चौथी अ

माँ

माँ तो जन्नत का फूल है,
प्यार करना उसका उसूल है ।
दुनिया की मोहब्बत फिजूल है,
माँ के कदमों की मिट्टी जन्नत की धूल है ।
माँ की हर दुआ कबूल है ,
ऐ इंसान माँ को नाराज करना तेरी भूल है।

नाम – अरपीता हंसा
अनुक्रमांक - 8
कक्षा चौथी -अ

आओ, पूछे एक सवाल

आओ, पूछे एक सवाल !

मेरे सिर में कितने बाल ?

कितने आसमान में तारे ?

बतलाओ या कह दो हारे !

नदियाँ क्यों बहती दिन रात ?

चिड़ियाँ क्या करती हैं बात ?

क्यों कुत्ता बिल्ली पर धाए ?

बिल्ली क्यों चूहे को खाए ?

फूल कहाँ से पाते रंग ?

रहते क्यों न जीव सब संग ?

बादल क्यों बरसाते पानी ?

लड़के क्यों करते शैतानी ?

नानी की क्यों सिकुड़ी खाल ?

अजी, न ऐसा करो सवाल !

यह सब ईश्वर की माया है,

इसको कौन जान पाया है ?

नाम – ईशान अत्री

कक्षा – पाँचवी अ

Saswati 2022

महात्मा गाँधी

महात्मा गांधी "बापू" या "राष्ट्रपिता में भारत में के रूप बहुत प्रसिद्ध है। उनका पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी है। वे एक महान स्वतंत्रता सेनानी थे और एक राष्ट्रवाद नेता की तरह ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारत को नेतृत्व किया था। उनका जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर नामक स्थान में हुआ था। उनकी मृत्यु 30जनवरी 1950 में हुई थी। गांधी जी को स्वच्छता से बहुत लगाव था। वे कही पर भी कूड़ा गंदगी को देखते तो तुरंत साफ कर देते थे। स्वच्छता एक ऐसा कार्य नहीं है जो हमे जबरदस्ती करना चाहिए। हमे उसे दिल से और बड़े उत्साह चाहिए। हमे अपने आस भी पास जहाँ गंदगी दिखे उसे तुरंत करना पर साफ कर देना चाहिए । इस कार्य को करने के बाद हमे हमेशा हाथ धोने चाहिए जिससे हम और हमारा परिवार स्वस्थ और तंदरूस्त रहे । सिर्फ कुछ ही स्वच्छ देश ऐसे ही हैं जहाँ के लोग सफाई कर्मचारियों का इंतजार नहीं करते वे अपना कूड़ा स्वयं साफ करते है । कुछ देशो में विद्यालय मे बच्चे अपनी कक्षा को स्वयं साफ करते है। अगर हमारे देश में सभी लोग ऐसा ही करें तो हमारा भारत स्वयं ही स्वच्छ हो जाएगा। हम भी पूरी कोशिश करेंगे की हमारे भारत को स्वच्छ बना सके। मैं साक्षी प्रतिज्ञा करती हूँ की अपने आस पास के ईलाके को साफ रखूंगी । सफाई कर्मचारियों की सहायता कर और दूसरे लोगों से भी कहूंगी।

नाम – साक्षी चौहान

कक्षा – पाँचवी अ

चार्ल्स रॉबर्ट डार्विन (1809-1882) :-(आधुनिक भौगोलिक विचार के संस्थापक।)

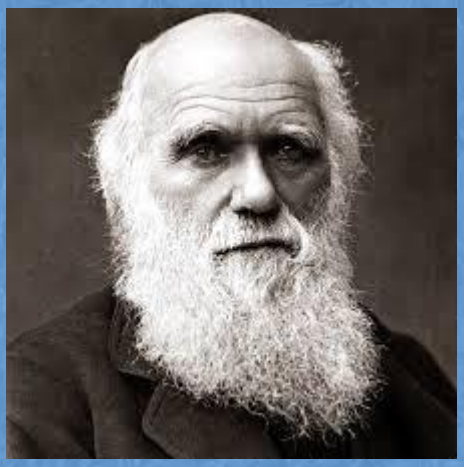

12 फरवरी 1809 को श्रूस्बरी, श्रॉपशायर (इंग्लैंड) में एक धनी और अच्छी तरह से जुड़े परिवार में जन्मे डार्विन एक प्रकृतिवादी थे। वह अपने विकासवाद के सिद्धांत और इसके संचालन के सिद्धांत के लिए प्रसिद्ध है, जिसे डार्विनवाद के नाम से जाना जाता है। उनके सिद्धांतों ने अपने समय की वैज्ञानिक और धार्मिक बहसों को बहुत प्रभावित किया।

चार्ल्स रॉबर्ट डार्विन के पिता, रॉबर्ट वार्निंग एक प्रतिष्ठित चिकित्सक थे। आठ साल की उम्र से उनकी सबसे बड़ी बहन ने उनका पालन-पोषण किया। प्रारंभिक जीवन के बाद डार्विन ने अपनी बाद की प्रमुखता का बहुत कम वादा दिखाया, उन्होंने प्राकृतिक इतिहास में रुचि विकसित की।) डार्विन कभी भी एक आदर्श छात्र नहीं थे, लेकिन वे एक भावुक शौकिया प्रकृतिवादी बन गए। उन्होंने एडिनबर्ग विश्वविद्यालय में चिकित्सा की शिक्षा प्राप्त की।

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय जहां उन्होंने 1831 में चिकित्सा में अपनी डिग्री प्राप्त की बिना किसी विशेष पद के। 1831 में, डार्विन दक्षिण ओरिका और प्रशांत द्वीप समूह के लिए एक प्रकृतिवादी के रूप में एक अभियान के साथ रवाना हुए। उनकी यात्रा का उद्देश्य दक्षिण अमेरिका के पश्चिमी तट के जीवन का सर्वेक्षण करना था। डार्विन विशेष रूप से हम्बोल्ट और चार्ल्स लिएल से प्रभावित थे। यात्रा पर, डार्विन ने इल के भूविज्ञान के सिद्धांतों को पढ़ा, जिसमें सुझाव दिया गया था कि चट्टानों में पाए जाने वाले जीवाश्म वास्तव में उन जानवरों के प्रमाण हैं जो कई हजारों या लाखों साल पहले रहते थे। लायल के तर्क को डार्विन के अपने दिमाग में पशु जीवन की समृद्ध विविधता और अपनी यात्रा के दौरान देखी गई भूवैज्ञानिक विशेषताओं द्वारा प्रबलित किया गया था। उनके विचारों में सफलता इक्काडोर (दक्षिण अमेरिका) के 850 किमी वेस्ट गैलापागोस द्वीप समूह में आई। डार्विन ने देखा कि गैलापागोस द्वीप समूह में से प्रत्येक ने अपने स्वयं के फिंच के रूप का समर्थन किया। 1836 में इंग्लैंड लौटने पर, डार्विन ने इन अवलोकनों की पहेलियों और प्रजातियों के विकास की पहेली को सुलझाने की कोशिश की। माल्थस (1798) के विचारों से प्रभावित होकर उन्होंने प्राकृतिक चयन की प्रक्रिया से होने वाले विकासवाद के सिद्धांत का प्रस्ताव रखा। अपने पर्यावरण के लिए

सबसे उपयुक्त जानवरों और पौधों के जीवित रहने और प्रजनन करने की संभावना अधिक होती है, जो उन विशेषताओं को पारित करते हैं जो उन्हें अपनी संतानों को जीवित रहने में मदद करती हैं। धीरे-धीरे, प्रजातियां समय के साथ बदलती हैं। डार्विन ने अपने सिद्धांत पर 20 साल तक काम किया। यह जानने के बाद कि एक अन्य प्रकृतिवादी, अल्फ्रेड रसेल वालेस ने भी इसी तरह के विचार विकसित किए थे, दोनों ने 1859 में अपनी खोज का एक संयुक्त बयान दिया। 1859 में डार्विन ने प्राकृतिक चयन के माध्यम से प्रजातियों की उत्पत्ति प्रकाशित की। पुस्तक अत्यंत विवादास्पद थी, क्योंकि डार्विन के सिद्धांत का तार्किक विस्तार यह था कि होमो सेपियन्स जानवरों का एक और रूप था। इसने यह संभव बना दिया कि लोग भी अभी-अभी विकसित हुए हों - संभवतः वानरों से और दुनिया को कैसे बनाया गया था, इस पर प्रचलित रूढ़िवाद को नष्ट कर दिया। डार्विन पर विशेष रूप से चर्च द्वारा जोरदार हमला किया गया था। हालाँकि, उनके विचारों ने जल्द ही मुद्रा प्राप्त की और नए रूढ़िवादी बन गए। इस पांच साल की यात्रा के दौरान वे प्रजातियों के क्रमिक विकास के प्रति आश्वस्त हो गए। इंग्लैंड लौटने पर, उन्होंने 1856 में विकास का एक निश्चित खाता लिखना शुरू करने से पहले अपने विचारों को परिष्कृत करने के लिए 20 वर्षों तक काम किया, जिसे उन्होंने 1859 में प्राकृतिक चयन के माध्यम से प्रजातियों की उत्पत्ति के रूप में प्रकाशित किया। उनके बाद के तरीके बहुत शारीरिक परेशानी में व्यतीत हुए क्योंकि वे 'चागास' बीमारी से पीड़ित थे, जिसे उन्होंने दक्षिण अमेरिका में रहते हुए अनुबंधित किया था। डार्विन की प्रतिभा केवल विकासवाद के प्रश्नों तक ही सीमित नहीं थी। उन्होंने कई अन्य प्राकृतिक घटनाओं की खोज की, जिनमें एनचेस की टैक्सोनॉमी, एटोल और बैरियर रीफ का निर्माण, और प्रजनन क्षमता में केंचुओं की भूमिका शामिल है। उनके अन्य कार्यों में अनुमान के तहत जानवरों और पौधों में भिन्नता (1868) और मनुष्य का वंश शामिल है। 1882 में डार्विन की मृत्यु के समय, उनकी महानता पर अब कोई विवाद नहीं था और उन्हें वेस्टमिंस्टर एब्बे, लंदन में दफनाया गया था। भौगोलिक अवधारणाओं के विकास पर डार्विन का प्रभाव चार्ल्स डार्विन ने विकासवाद के सिद्धांत को प्रतिपादित किया जिसने जैविक, पर्यावरण और पृथ्वी विज्ञान में क्रांति ला दी। उनके विकास के सिद्धांत में सामान्य जैविक वंश, क्रमिकता और प्रजातियों के गुणन के प्रति प्रतिबद्धता शामिल थी। उन्होंने प्राकृतिक चयन, परिवार चयन, सहसंबद्ध भिन्नता उपयोग वंशानुक्रम और निर्देशित भिन्नता की भी बात की। डार्विन ने समझाया कि कैसे हमारी दुनिया में जीवों की भीड़ इतनी सूक्ष्मता से अपने पर्यावरण के अनुकूल हो जाती है, एक दैवीय मास्टर प्लान का सहारा लिए बिना, एक सादे, कारण, प्राकृतिक तरीके से अस्तित्व में आ सकती है। डार्विन ने तर्क दिया कि अस्तित्व के लिए संघर्ष होना चाहिए; इसके बाद यह हुआ कि जो बच गए वे प्रतिस्पर्धियों की तुलना में अपने वातावरण के लिए बेहतर रूप से अनुकूलित थे यह अनिवार्य रूप से प्रजनन सफलता का एक सिद्धांत था जिसमें अपेक्षाकृत बेहतर अनुकूलन बढ़ता है जबकि अपेक्षाकृत कम अनुकूलन लगातार समाप्त हो जाते हैं। इसी तरह का एक सिद्धांत अल्फ्रेड रसेल वालेस (1823-1913) द्वारा एक साथ सामने रखा गया था जिन्होंने दक्षिण-पूर्व एशिया के द्वीपों का सर्वेक्षण किया था। स्टोडडार्ट (1966) का सुझाव है कि डार्विन के काम से निम्नलिखित चार मुख्य विषयों का

पता बाद के भौगोलिक शोध में लगाया जा सकता है: 1 समय या विकास के माध्यम से परिवर्तन - क्रमिक या सम की एक सामान्य अवधारणा निम्न से उच्च या अधिक जटिल रूपों में संक्रमण। डार्विन ने इस्तेमाल किया शब्द 'विकास' और विकास' अनिवार्य रूप से एक ही अर्थ में। 2, एसोसिएशन और संगठन - एक जीवित पारिस्थितिक तंत्र के हिस्से के रूप में मानवता जीव। 3 संघर्ष और प्राकृतिक चयन। 4. प्रकृति में भिन्नता का यादच्छिकता या संयोग चरित्र। डार्विन, जिन्होंने रिटर के टेलीलॉजिकल दृष्टिकोण और मनुष्य और अन्य प्रजातियों की उत्पत्ति के बारे में प्रचलित धार्मिक अवधारणा को खारिज कर दिया, ने विकास और विकास को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया भौतिक और मानव भूगोल दोनों में कैपी। भौगोलिक विकास पर डार्विन के सिद्धांत के कुछ महत्वपूर्ण प्रभाव पद्धति और दृष्टिकोण को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है।

राजनीतिक भूगोल पर प्रभाव डार्विन से प्रभावित, एक बहुत ही महत्वपूर्ण अवधारणा, अर्थात् 'लेबेन्स्राम' (रहने की जगह) रत्ज़ेल द्वारा गढ़ी गई थी। राजनीतिक भूगोल पर अपनी पुस्तक में, रत्ज़ेल ने एक जीवित जीव के साथ एक राष्ट्र की बराबरी की, और तर्क दिया कि क्षेत्रीय विस्तार के लिए एक देश की खोज अंतरिक्ष के लिए एक बढ़ते जीव की खोज के समान थी। इस प्रकार राष्ट्रों के बीच संघर्ष को उस क्षेत्र के लिए एक प्रतियोगिता के रूप में देखा गया जिसके भीतर सबसे योग्य जीवित रहने के साथ विस्तार करना है। इस प्रकार डार्विन की सबसे उपयुक्त धारणा के संघर्ष और अस्तित्व को भूगोलवेत्ताओं ने अपनाया जिसने जर्मन राजनीतिक विचारकों के दर्शन को ढाला। रत्ज़ेल ने जोर देकर कहा कि जिस तरह पौधे और जानवरों की दुनिया में अस्तित्व के लिए संघर्ष हमेशा अंतरिक्ष के मामले में केंद्रित होता है, उसी तरह राष्ट्रों के संघर्ष बड़े हिस्से में केवल क्षेत्र के लिए संघर्ष होते हैं। रहने की जगह की इस मौलिक अवधारणा ने जीवनी के विकास में मदद की अवधारणा को जर्मन स्कूल ऑफ जियोपोलिटिक द्वारा 1920 और 1930 के दशक में विनियोजित किया गया था और क्षेत्रीय विस्तार के नाजी कार्यक्रम को सही ठहराने के लिए इस्तेमाल किया गया था।

-सिमरन अवस्थी

कक्षा- बारहवीं-बी

अनुक्रमांक- 36

बेटी

जब-जब जन्म लेती है बेटी ,
खुशियाँ साथ लाती है बेटी ।

ईश्वर की सौगात है बेटी,
सुबह की पहली किरण है बेटी।

तारों की शीतल छाया है बेटी,
आँगन की चिड़िया है बेटी ।

त्याग और समर्पण है बेटी,
नये नये रिश्ते बनाती है बेटी ।

जिस घर जाए, उजाला लाती है बेटी,
बार - बार याद आती है बेटी ।

बेटी की कीमत उनसे पूछो,
जिसके पास नहीं है बेटी ।

केन्द्रीय विद्यालय साम्बा
नाम~हिताशा भारती
कक्षा~ 8 'अ '

पेड़ बचाओ

एक बार की बात है। मैं और मेरी मित्र जंगल मे गए और तभी हमें रोने की आवाज़ आई । हमने देखा तो वह एक पेड़ था । हमने उससे पूछा कि तुम क्यों रो रहे हो? उसने कहा कि तुम किस गैस से जी रहे हो? हम दोनों ने कहा आक्सीजन । फिर पेड़ बोला यह आक्सीजन कौन दे रहा है ? हमने कहा आप । पेड़ बोला अब तुम्हें आक्सीजन कम मिलेगी या शायद खत्म ही हो जाए । हमने कहा ऐसा क्यों? पेड़ ने कहा, तुम्हें कोई आवाज़ आ रही है क्या ? हमने कहा हाँ, आ रही है मशीनों की । पेड़ बोला यह पास के जंगल से आ रही है और तुम्हें पता है वहाँ पेड़ काटे जा रहे हैं। यह बोलता हुआ पेड़ रोने लगा और बोला एक तो हम इंसानों को आक्सीजन दे रहे हैं और इंसान हमें काटे जा रहे हैं । फिर हम दोनों ने पहले तो पेड़ से माफ़ी मांगी और उस जंगल मे गए जहाँ पेड़ काटे जा रहे थे । फिर हम दोनों मित्रों ने उन्हें समझाया कि कृपया इन पेड़ों को ना काटें ।

अंत में मैं यही कहना चाहती हूँ कि कृपया पेड़ों को न काटें ।

अक्षरा चौधरी
आठवीं 'अ'

कोशिश कर हल निकलेगा

कोशिश कर, हल निकलेगा

आज नहीं तो, कल निकलेगा।

अर्जुन के तीर सा सध

मरूस्थल से भी जल निकलेगा।

मेहनत कर, पौधों को पानी दे

बंजर जमीन से भी फल निकलेगा।

ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे

फ़ौलाद का भी बल निकलेगा।

जिंदा रख, दिल में उम्मीदों को

गरल के समंदर से भी गंगाजल निकलेगा।

कोशिशें जारी रख कुछ कर गुजरने की

जो है आज थमा-थमा सा, चल निकलेगा।

वंशिका
कक्षा आठवीं ब
अनुक्रमांक -05

रोको मत खुद को कुछ करने से

रोको मत खुद को कुछ करने से,

कुछ तो बदलेगा आगे बढ़ने से।

इस तरह हार कर बैठे हो किसका इंतज़ार है,

अकेले आगे बढ़ते रहो,खुद से अगर प्यार हैं।

कहने दो दुनिया को जो कहते हैं,

जीतने वाले कहाँ किसी से डरते हैं ।

देखी है मैंने थोड़ी जिंदगी,

थोड़े हार भी देखे हैं।

गिरी हूँ बहुत बार,

अन्धकार भी देखे हैं।

एक बार फिर खड़े होकर,

असफलता पर वार करो,

जीतना है अगर तुमको,

खुद को फिर से तैयार करो ।

वंशिका
कक्षा आठवीं ब
अनुक्रमांक -05

बंद स्कूल पर एक कविता

एक मोड़ पर मुड़ते ही
प्रख्यात एक विद्यालय था ,
बच्चों को शिक्षित करने का
एक बड़ा मुख्यालय था।

जहाँ पर घुसते ही अक्सर
एक शोर सुनाई पड़ता था,
छात्रों की संख्या का न कोई
छोर दिखाई पड़ता था।

आज वहाँ घुसते ही
एक सन्नाटा सा छा जाता है ,
मरघट है या विद्यालय है
समझ कुछ नहीं आता है ।

नाम : कामाक्षी
कक्षा : आठवीं अ

रचनाञ्जलि

शिक्षकों की रचनाएँ

माँ वो शब्द है जिसमें कायनात समाई है

माँ वो शब्द है जिसमे कायनात समाई है...
जिसकी कोख मे शुरु हुआ था जिन्दगी का सफर,
जिसकी गोद मे खोली थी आँखें पहली बार,
जिसकी नजरों से ही दुनिया को देखा था, जाना था,
जिसकी उँगलियाँ पकड कर चलना सीखा था पहली बार !!

उसी ने हमारी खुद से करायी थी पहचान ,
दुनिया का सामना करना भी उसी ने सिखाया,
जन्म से ही दर्द से शुरु हुआ था रिश्ता हमारा,
शायद हर दर्द पे इसीलिए निकलता है शब्द माँ हर बार !!

माँ की जिन्दगी होती है उसके बच्चे में समाई।
पर बड़े होते ही दूर हो जाती है राहे उसकी जिन्दगी की,
भुला देता है इस शब्द की एहमियत अपनी व्यस्तता में कहीं,
फिर अचानक कहीं से सुनाई देती है आवाज माँ ,

आँखें भर आती है बस धार धार !!
माँ का कर्ज नहीं चुका सकता कभी कोई इस दुनिया में,
भगवान से भी बड़ा है माँ का दर्जा इस दुनिया में,
ना होती वो तो ना बसता ये संसार कभी,
ना होगी वो तो भी खत्म हो जाएगा संसार भी!!

कश्ती है इसलिये 'मुस्कान' जागो अब भी वक्त है,
ना करो शर्मसार अपनी जननी को, ना करो अत्याचार औरत के अस्तित्व पर,
न मारो बेटी के अंश को यु हर बार.
नहीं तो इक दिन तरस जाएगा माँ के एहसास को ही ये सारा संसार !!
क्योंकि माँ वो शब्द है जिसमे कायनात समाई है... वो शब्द है जिसमे कायनात समाई है...

श्वेता शर्मा

प्राथमिक अध्यापिका

श्रीनिवास रामानुजन

अगर गणित की बात हो और उसमें भारत के महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन का नाम ना आये तो एक अधूरापन सा लगता है.

था एक छोटी उम्र का नौजवान,
श्रीनिवास रामानुजन है जिसका नाम,
भारत माँ की गोद में जन्मा
सदी का एक सुपुत्र महान।
बचपन में थी कुछ ऐसी लगन
संख्याओं में थी उसकी जान,
बड़ी-बड़ी समीकरणों को
पल में कर देता था आसान।
असम्भव को बना सम्भव
दर दिखाया वो नादान
हार्डी भी हो गया था अचंभित
देख उसके परिणाम।
जाने कैसे हल करता था
सरस्वती माँ का था उसपे अनोखा वरदान
छोटे से जीवन अंतराल में
गणित को दे गया एक नई पहचान।
हैरान थी दुनिया देख उसकी योग्यता
महान गणितज्ञ भी करते थे सलाम
उस जैसा ना था ना होगा कभी अरूण
दिखा दिया उसने करके ऐसा काम।

नाम – शीतल कुण्डल
प्राथमिक अध्यापिका

माँ, आख़िर क्यों

खिलाकर पहले मुझको खुद फिर खाती थी तू,,
लगती ज़रा सी चोट मुझे तो दौड़ी-दौड़ी आती थी तू,;
जब कभी हँसती थी मैं, तू भी तो मुस्कुराती थी माँ,;
मेरी हर बचकानी बदमाशी पर तू सौ बार सदके जाती थी माँ.,
फिर क्यूँ तेरी गोद से दूर ज़रा मैं होने लगी थी,,
माँ, आखिर क्यों बड़ी मैं होने लगी थी..!

- सुविधा यादव
(पी.जी.टी. फिजिक्स)

ज़माने को सुना

ख़ामोशी को अपनी ज़माने को सुना,
तू एक बुलंद आवाज़ बना कर,
अगर नहीं कर सकता इतना भी खुद के लिए,
तो छिप जा कोने में कहीं,
अपने ख्वाबों की चिता जला कर..!

- सुविधा यादव
(पी.जी.टी. फिजिक्स)

बैंकिंग साइबर क्राइम

साइबर क्राइम देश-दुनिया की बड़ी समस्या बन गई है। आप एहतियात बरत कर साइबर अपराधियों का शिकार होने से बच सकते हैं। अगर आप नेट बैंकिंग कर इस्तेमाल करते है तो .....

- अपने खाते से जोड़े गए मोबाइल पर बैंक द्वारा भेजे गए ओटीपी पासवर्ड किसी से साझा न करें।

- अपने नेट बैंकिंग और एटीएम का पासवर्ड निरंतर बदलते रहें।

- बैंक अकाउंट से होनेवाले वाले ट्रांजेक्शन पर लगातार नजर बनाए रखें और वैसे ट्रांजेक्शन की सूचना तुरंत बैंक को दें जो आपकी जानकारी के बगैर हो।

- किसी अनजान व्यक्ति से एटीएम परिसर में मदद नहीं लें।

- मोबाइल पर अनजान व्यक्तियों के वैसे प्रलोभन से बचें जिसमें आपको लाखों रुपये या पिफर महंगी कार का विजेता बताया जाता है।

- टू स्टेप वेरीपिफकेशन का प्रयोग करें जिससे किसी अकाउंट में लॉग इन करते हैं तो आपके मोबाइल पर एक ओटीपी आएगा। उस ओटीपी का प्रयोग करके ही आप अपने अकाउंट में लॉग इन कर सकते हैं।

प्रदीप स्वामी
स्नातकोतर - संगणक विज्ञान

सोशल मीडिया

21वी सदी के प्रारम्भ मे मोबाइल फ़ोन ने क्रन्तिकारी बदलाव लाये। मोबाइल फ़ोन के उपभोक्ता बढ़ते चले गए और इंटरनेट का इस्तेमाल भी। मोबाइल फ़ोन अब स्मार्ट फ़ोन बनते चले गए और उसी के साथ सोशल मीडिया की शरुवात भी हुई। सोशल मीडिया संचार और संपर्क का सबसे प्रभावी माध्यम है। फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर और लिंकेडीन सोशल मीडिया के कुछ प्रभावी माध्यम है। अपने मोबाइल फ़ोन से एक एप्लीकेशन के द्वारा हम पूरी दुनिया से जुड़ सकते है।

सोशल मीडिया के फायदे:-

- सामाजिक भावना को बढ़ावा मिल रहा है।
- किसी भी विषय पर तेजी से कई स्रोतों से जानकारी मिल जाती है। ज्यादा जानकारी विषय को समझने मे मददगार साबित होती है।
- घर बैठे बैठे दुनिया को अपनी प्रतिभा कौशल क्षमता से अवगत करा सकते है।
- यूट्यूब, फेसबुक और इंस्टाग्राम के माध्यम से घर बैठे ऑनलाइन बिज़नेस भी कर रहे है।
- सोशल मीडिया के माध्यम से स्वतंत्र अभिव्यक्ति को भी बढ़ावा मिल रहा है।
- सामाजिक मुद्दों पर लोगो को जागरूक करना आसान हो गया है।

सोशल मीडिया का नकारत्मक प्रभाव:-

- युवा पीढ़ी सोशल मीडिया के द्वारा ऑनलाइन धोखाधड़ी और साइबर धमकी का शिकार भी हो रहे है।
- सोशल मीडिया और इंटरनेट के कारण युवा पीढ़ी को गैर क़ानूनी सामग्री आसानी से उपलब्ध हो जाती है। इस प्रकार की सामग्री युवाओं के भीतर एक नकारत्मक व्यक्तित्व को जन्म देती है।
- सोशल मीडिया पर अधिक समय बिताने वाले युवा अधिकतर डिप्रेशन का शिकार हो जाते है।
- कमजोर व्यक्तित्व: युवा अपना अधिक समय सोशल मीडिया पर खर्च कर देते है। जिसके कारण उनकी मानसिक स्थिति वास्तिक जीवन शैली से दूर होती चली जा रही है इसका प्रभाव युवाओं के व्यक्तित्व पर पड़ रहा है।
- समय की बर्बादी: युवा पीढी का अधिक समय सोशल मीडिया ट्रोलिंग , शेयरिंग और कमेंट्स मे खर्च हो रहा है।

प्रदीप स्वामी

स्नातकोतर - संगणक विज्ञान

साइबर बुलिंग

साइबर बुलिंग से तात्पर्य इंटरनेट या मोबाइल टेकनोलॉजी का प्रयोग करके असभ्य, घटिया या तकलीफदेह संदेश, टिप्पणियां और इमेज/वीडियो भेजकर किसी को जानबूझकर तंग करना या डराना धमकाना है। किसी साइबर बुली द्वारा दूसरों को डराने धमकाने के लिए टेक्स्ट मेसेज, ई-मेल, सोशल मीडिया प्लेटफार्म, वेब पेज, चैट रूम आदि का प्रयोग किया जाता है।

बच्चों के प्रति साइबर बुलिंग के परिणाम कई प्रकार के होते है। ये शारीरिक, भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक परिणामों के रूप में हो सकते है जिससे न केवल विद्यार्थियों का शैक्षणिक निष्पादन बल्कि काफी हद तक उनका दैनिक जीवन भी प्रभावित होता है।

साइबर बुलिंग से बचाव:-

- सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर अनजान व्यक्तियों की फ्रेंड रिक्वेस्ट स्वीकार न करें।
- सोशल मीडिया पर अपनी निजी सूचना जैसे जन्म, तिथि, पता और फोन नम्बर साझा न करें।
- कभी भी अनजान स्रोतों से अनावश्यक साफ्टवेयर और एप्स आनलाइन गेम आदि को इंस्टाल न करें।
- चैट रूम में चैटिंग करते समय विशेष रूप से सतर्क होना चाहिए। चैट रूम में अपने निजी ब्योरे कभी साझा न करें और अपनी पहचान को सीमित करें।
- यदि किसी दोस्त या अनजान व्यक्ति की पोस्ट पढ़कर आप दुःखी महसूस करे तो कृपया तत्काल अपने माता-पिता या बड़ों को इसकी जानकारी दें जिससे वे आपकी सहायता कर सकें।
- आपको घटिया कमेंट या दुःखदायी मेसेज या परेशान करने वाली पिक्चर्स / वीडियोज आनलाइन शेयर नहीं करनी चाहिए।

प्रदीप स्वामी

स्नातकोतर - संगणक विज्ञान

रचनाञ्जलि

सह-शैक्षणिक गतिविधियाँ

एक भारत श्रेष्ठ भारत

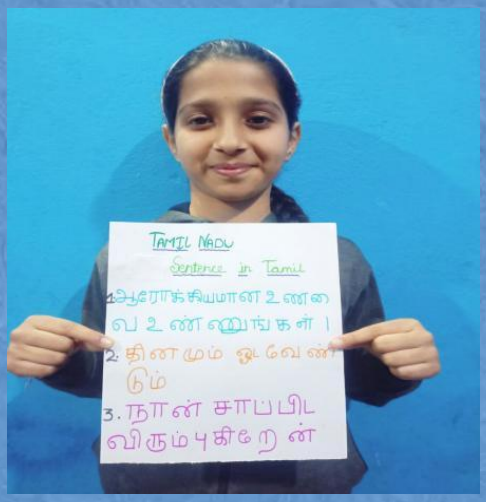

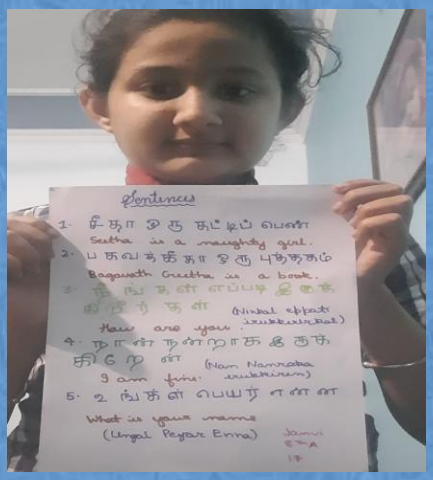

रचनाञ्जलि

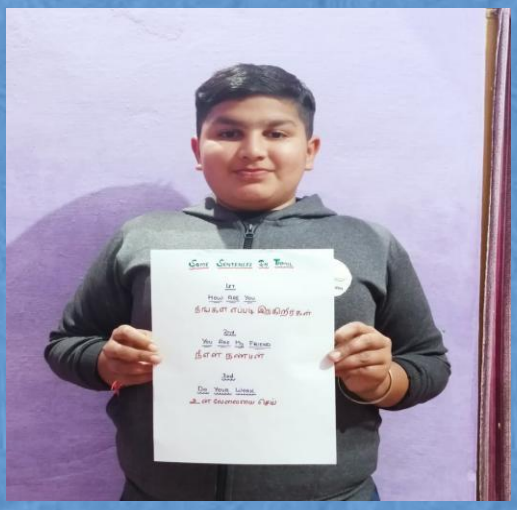

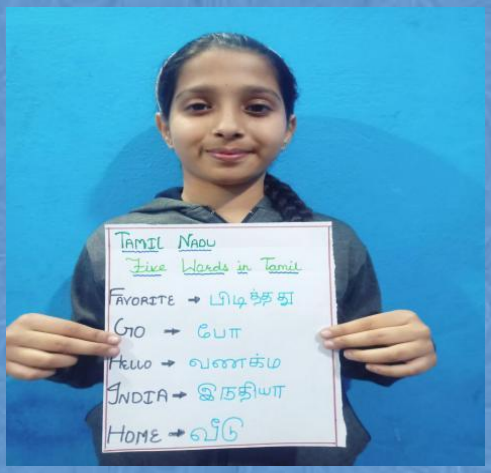
TAMIL NADU
Five Words in Tamil
FAVORITE → பிடித்தது
GO → போ
Hello → வணக்கம
INDIA → இந்தியா
HOME → வீடு

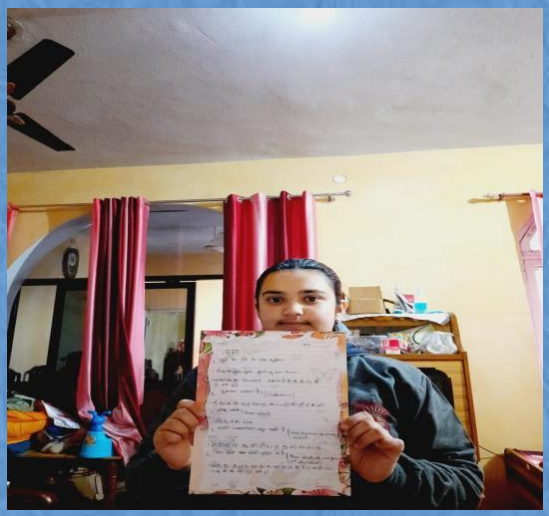

स्काउट और गाइड

रचनाञ्जलि

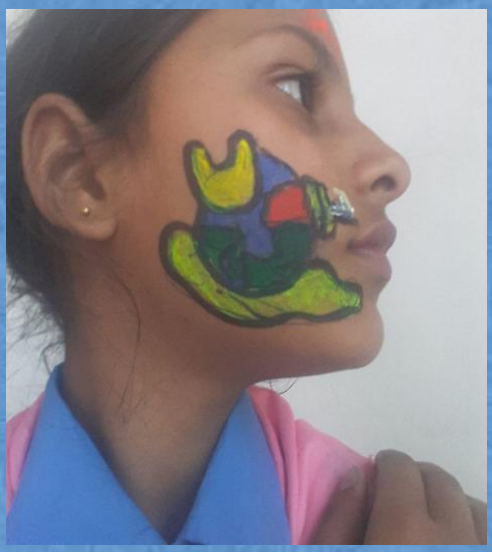

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

स्वतंत्रता दिवस समारोह 2021

राष्ट्रीय युवा दिवस

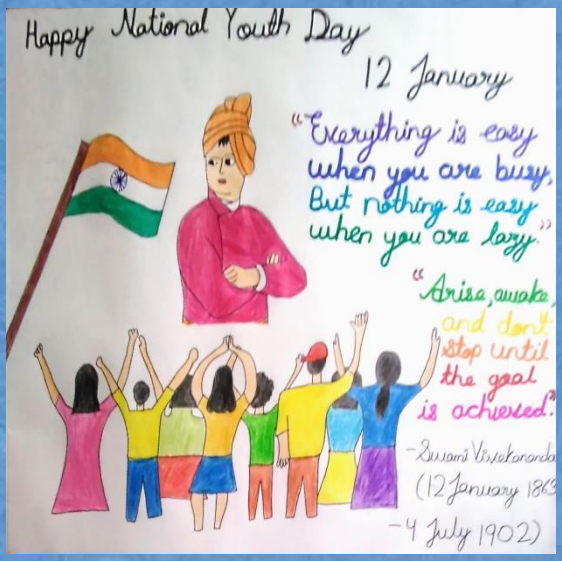

Happy National Youth Day
12 January
“Everything is easy when you are busy. But nothing is easy when you are lazy.”
“Arise, awake and don't stop until the goal is achieved.”
-Swami Vivekananda
-4 July 1902)

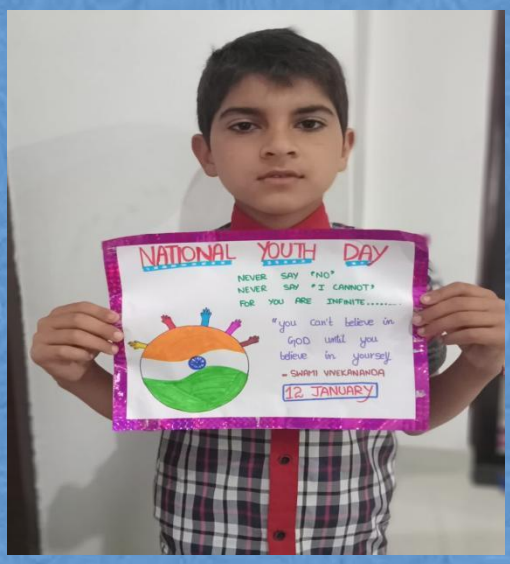

NATIONAL YOUTH DAY
NEVER SAY "NO" NEVER SAY "I CANNOT" FOR YOU ARE INFINITE.......
"you can't believe in GOD until you believe in yourself
- SWAMI VIVEKANANDA
12 JANUARY

Swamiji's Message
Youth Day
Swami Vivekananda

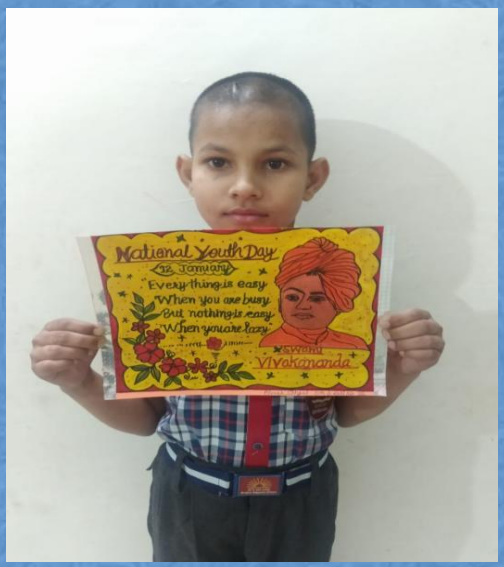

National Youth Day
12 January
Everything is easy When you are busy But nothing is easy When you are lazy
Swami Vivekananda

रचनाञ्जलि

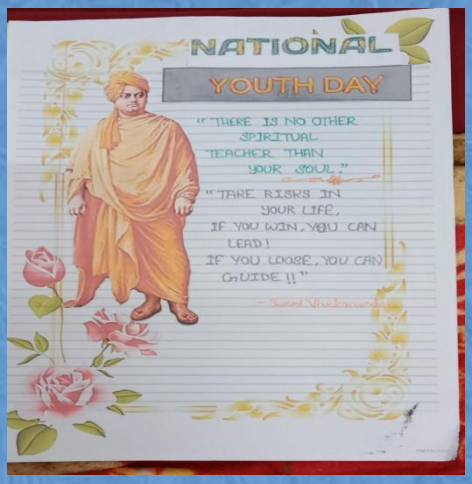

NATIONAL
YOUTH DAY
"THERE IS NO OTHER SPIRITUAL TEACHER THAN YOUR SOUL."
"TAKE RISKS IN YOUR LIFE, IF YOU WIN, YOU CAN LEAD! IF YOU LOOSE, YOU CAN GUIDE !!"

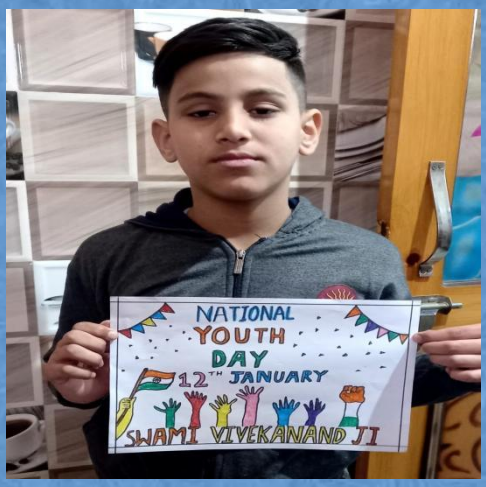

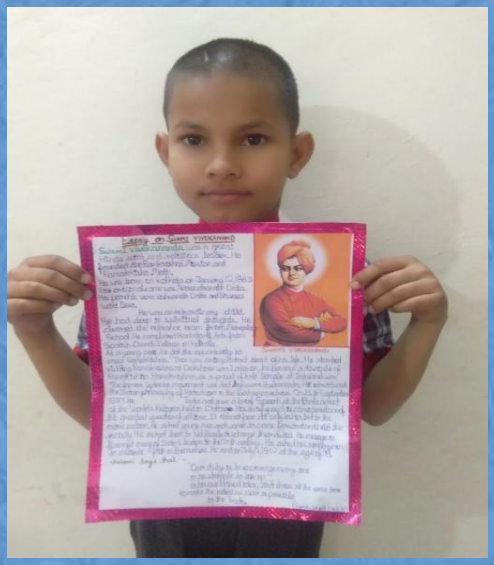

NATIONAL YOUTH DAY
12TH JANUARY
SWAMI VIVEKANAND JI

NATIONAL YOUTH DAY

Swami Vivekananda
Youth Day

गणतंत्र दिवस समारोह

सरस्वती पूजा 2022

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस 2022

रचनाञ्जलि

KENDRIYA VIDYALAYA SAMBA
IF YOU WANT TO SHINE LIKE A SUN, FIRST BURN LIKE A SUN.

KENDRIYA VIDYALAYA SAMBA
IF YOU WANT TO SHINE LIKE A SUN, FIRST BURN LIKE A SUN.

प्रयोगशालाएं

भाषा संगम

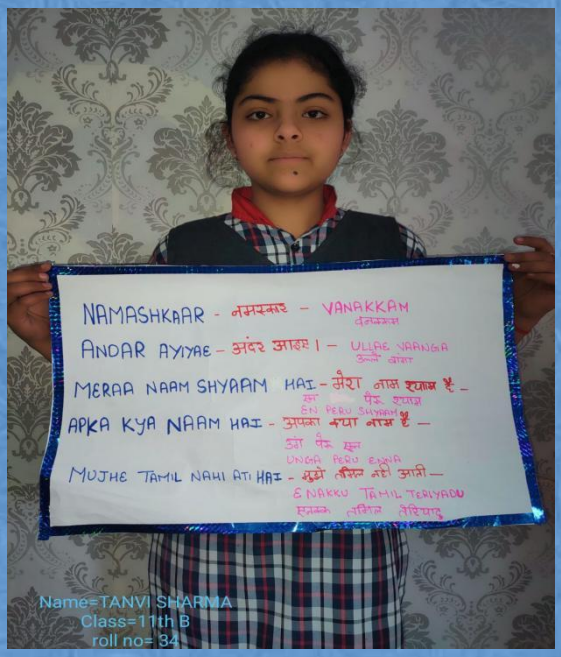
NAMASHKAAR - नमस्कार - VANAKKAM
ANDAR AYIYAE - अंदर आइए ! - ULLAE VAANGA
MERAA NAAM SHYAAM HAI - मेरा नाम श्याम है -
APKA KYA NAAM HAI - आपका क्या नाम है -
MUJHE TAMIL NAHI ATI HAI - मुझे तमिल नहीं आती -
Name=TANVI SHARMA
Class=11th B
roll no= 34

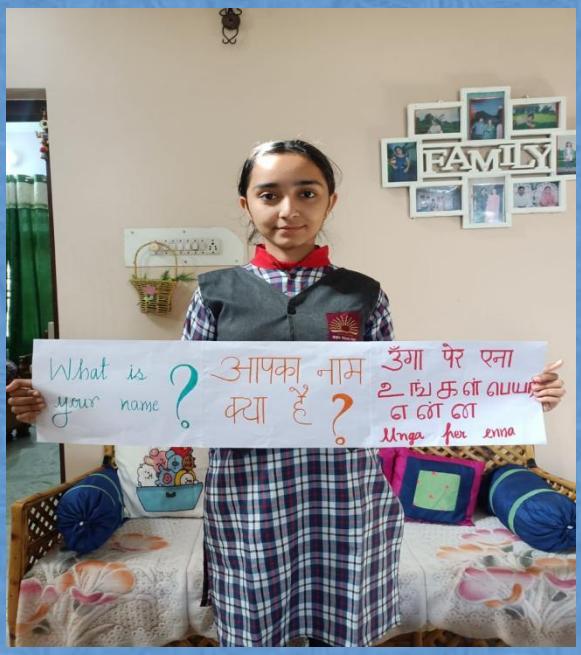
FAMILY
What is your name ?
आपका नाम क्या है ?

English
Tamil

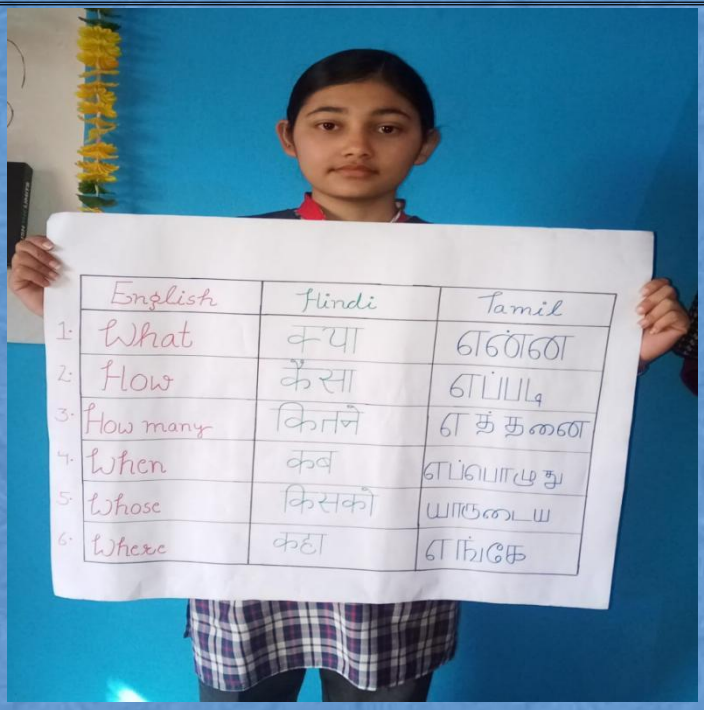

English | Hindi | Tamil
1. What | क्या | என்ன
2. How | कैसा | எப்படி
3. How many | कितने | எத்தனை
4. When | कब | எப்பொழுது
5. Whose | किसको | யாருடைய
6. Where | कहा | எங்கே

WORD
Blanket [English]
Tamil

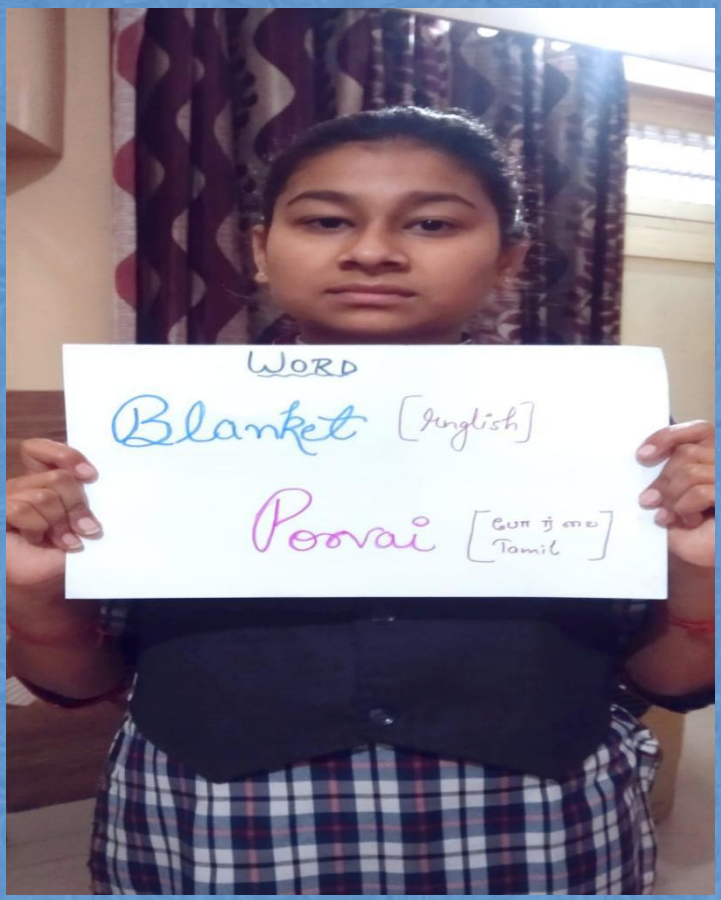

रचनाञ्जलि

प्रभात-सभा

निपुण भारत

कार्यपुस्तिका वितरण

गणित उद्यान

Cuboid
Volume - Lxbxh cu. Units.
Curved Surface Area -2(l+b)h Sq. Units.
Total Surface Area -2(lb+bh+hl) Sq. Units.
Where
L- Length.
b - breadth.
H - Height.
Cube
Volume - a
Curved Surface - 4a
Area
Total Surface Area - 6a
Where
a - Side of Cube
TYPES OF TRIANGLES
CYLINDER
REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

Cuboid
Volume - Lxbxh cu. Units.
Curved Surface Area -2(l+b)h Sq. Units.
Total Surface Area -2(lb+bh+hl) Sq. Units.
Where
L- Length.
b - breadth.
H - Height.
Cube
Volume - a
Curved Surface - 4a
Area
Total Surface Area - 6a
Where
a - Side of Cube
TYPES OF TRIANGLES
CYLINDER
REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

धन्यवाद!